जयपुर-वैशाली नगर। राजस्थान के गवर्नर कल्याण सिंह व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सेवाओं के बारे में बताते हुए ब्र.कु. सुषमा।

कोलकाता-राय बगान। हैदर अज़ीज़ साफवी,मिनिस्टर ऑफ करेक्शनल एडमिनिस्ट्रेशन,प.बंगाल सरकार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. स्मृति।

हल्दवानी। नैनिताल हाईकोर्ट में आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. वीणा, ब्र.कु. स्वामीनाथन, बार एसोसिएशन के चेयरमैन के.एस. बोरा, एडवोकेट गौरी देव, ब्र.कु. नीलम व अन्य।

बहादुरगढ़। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर लगाई गई झाँकी का उद्घाटन करते हुए विधायक नरेश कौशिक। साथ हैं ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. सुरेन्द्र व अन्य।

दिल्ली-महरौली। छत्तरपुर क्षेत्र के काउंसलर अनीता त्यागी व अनिल त्यागी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. अनीता। साथ हैं अन्य।

फरीदाबाद सेक्टर 21.। सिद्धार्थ आश्रम के प्रमुख पुरुषोत्तम दास को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रीति व ब्र.कु. मधु।

विकारी वृत्तियों से जिसकी बुद्धि परे वही सन्यासी

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

व्यक्ति को बांधने वाले या मुक्त करने वाले उसके कर्म नहीं हैं, बल्कि उसके कर्म करने की वृत्ति है कि कौन-सी वृत्ति से वह कर्म किया गया है। द्वेष, वैर, लोभ, कामना आदि विकारों का त्याग ही सन्यास है। कर्त्तव्य, कर्मों का त्याग करना ये कोई सन्यास नहीं है। इसलिए कई बार हमें उदाहरण में यह जानने को मिलता है कि एक बार एक सन्यासी सब कुछ सन्यास करके अपने शिष्य के साथ एक हाथ में कमण्डल लेकर के आगे जा रहा था। अचानक उनके मन में विचार आया कि ये शिष्य का बंधन भी क्यों चाहिए? इसलिए उसने शिष्य को कहा कि तुम अपने मार्ग पर आगे बढ़ो और मैं अपने मार्ग पर आगे बढ़ता हूँ। अब दोनों के बीच में कमण्डल एक ही था। अब कमण्डल में बुद्धि जाती है कि कमण्डल कौन लेगा? उस पर उन दोनों की बहस आरंभ हो गयी कि कमण्डल का क्या करें? आखिर उन दोनों ने फैसला किया कि कमण्डल को भी तोड़कर आधा-आधा ले लें। इसका आशय है कि आप सब कुछ त्याग करते हो, लेकिन उसकी वृत्ति के अंदर सन्यास नहीं है, तो कोई फायदा नहीं है। इंसान कर्म कोई भी करे लेकिन उस कर्म के अंदर वैर, द्वेष, लोभ, कामना आदि विकार नहीं होना चाहिए। इन वृत्तियों से जिसकी बुद्धि परे हो जाती है, वही सच्चा सन्यासी है, भले ही वह गृहस्थ में रहता हो, तो भी वह सन्यासी जानने योग्य है।

भगवान ने फिर आगे बताया कि कर्मयोग के बिना सन्यास की प्राप्ति नहीं हो सकती है। जो योगयुक्त और पवित्र आत्मा है, जो सर्व प्राणियों में आत्मा को देखता है, आत्मिक दृष्टि का अभ्यास करता है, वह इस शरीर को नहीं देखता है कि ये फलाना है, ये फलानी है। लेकिन हर एक में विराजमान आत्मा को देखता है। आत्मा को देखते हुए उसका मन वश में होता है। जब शरीर को देखता है कि ये काला है, ये गोरा है, ये ऊंचा है, ये नीचा है तो उसके अंदर अनेक प्रकार के भाव आने लगते हैं तो मन वश में नहीं रहता है। मन को वश में करने की सहज विधि बतायी है कि तुम सबमें आत्मा को देखो। ऐसे वह जीतेन्द्रिय, सर्व कर्मेन्द्रिय द्वारा कर्म करते हुए भी स्वयं को उससे भिन्न समझता है। शरीर मात्र एक साधन है। जो व्यक्ति अनासक्त भाव से अपना कर्म करता है और उसका सभी फल परमात्मा के प्रति समर्पित कर देता है, वह कर्म करते हुए भी कर्म बंधन से अलिप्त रहता है। जिस प्रकार कमल जल से अलिप्त रहता है वैसे कर्मयोगी का हर कर्म आत्मशुद्धि के लिए ही होता है। वह पुरुष (आत्मा) नौ द्वार वाले इस देह में रहते हुए मन, बुद्धि, संस्कार पर अपना नियंत्रण करते हुए परम शांति एवं परम सुख का अनुभव करता है। जैसे कमल जल में रहते अलिप्त रहता है, ऐसे संसार में रहते हुए भी वह अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाता है। राजा जनक ने एक बार सवाल किया कि जीवन-मुक्त स्थिति किसको कहते हैं? मुझे वो ज्ञान कोई एक सेकण्ड में दें। कई विद्वान आये राजा जनक को ज्ञान सुनाने के लिए लेकिन जैसे ही वे ज्ञान देना आरंभ करते तो राजा जनक कहते कि मुझे ज्ञान नहीं चाहिए। मुझे प्रैक्टिकल में कोई एक सेकण्ड में बतायें कि जीवन-मुक्त स्थिति किसको कहते हैं। आखिर जब सभा शांत हो गई, तो राजा जनक भी निराश हो गए और कहा कि मेरे विद्वानों में कोई भी ऐसा नहीं जो जीवन-मुक्त स्थिति को बता सके। तभी वहाँ अष्टावक्र प्रवेश करते हैं। अष्टावक्र जैसे ही आगे बढ़ते हैं ज्ञान सुनाने के लिए तो सारी सभा उस पर हंसने लगती है। उस समय अष्टावक्र ने राजा से कहा कि हे राजन! मैं तो समझता था कि तुम्हारे दरबार में विद्वानों की सभा है, लेकिन आज मुझे पता चला कि ये तो चमारों की सभा है। सारे विद्वान एकदम गुस्से में आ गए कि हमें चमार कहा, अष्टावक्र ने कहा कि ये विद्वान मुझ आत्मा को नहीं देखते हैं कि ये आत्मा भी कितनी ऊंच हो सकती है? वो मेरी चमड़ी को देख रहे हैं इसलिए हंस रहे हैं। - क्रमशः

आनंद का रास्ता... - पेज 2 का शेष

कथा प्रस्तुत की गई है, जिसमें एक युवक है जो आनंद की खोज के लिए फकीर की कुटिया पर पहुंच जाता है। उसके द्वार को खटखटाता है। अंदर से आवाज़ आती है : ``कौन है? क्या खोज रहा है?'' युवक कहता है : ``मुझे खबर नहीं है कि मैं कौन हूँ। वर्षों से आनंद की खोज में भटक रहा हूँ। आनंद की खोज ने मुझे आपकी कुटिया तक पहुंचा दिया है।'' फकीर ज़ोर से हंसा और पर्णकुटि के अंदर से कहाः ``जो स्वयं को नहीं पहचानता उसे आनंद कहां से मिल-गा!''

फकीर ने पर्णकुटि का द्वार खोला तो फकीर की सुंदर लेकिन नग्न आकृति देख वो युवक विस्मित हो गया। फकीर के पैर पकड़ कर कहाः ``मुझे बताइए,आनंद कहां है? आनंद कहां है?

फकीर ने कहा :``मेरा पैर छोड़ दे। किसी के शरण में जाने से आनंद नहीं मिलता। कहो,क्या विचार है ?''

युवक ने कहाः ``मैं पहले आनंद को जानना चाहता हूँ, क्योंकि आनंद को जाने बिना वो प्राप्त कैसे होगा!''

उसके बाद फकीर ने अपनी झोली से दो फल निकाले और कहा : ``यह अद्भुत फल है। पहला फल खाएगा तो तुझे पता चलेगा कि आनंद क्या है। और दूसरा फल खाएगा तो तू स्वयं ही आनंदमय हो जाएगा। लेकिन याद रखना, तुम दोनों में से एक ही फल खा सकोगे। कोई भी एक फल खाएगा तो दूसरा फल अपने आप ही अदृश्य हो जायेगा। अब निर्णय करना तुम्हारे हाथ में है। तुम्हारी आपकी भटकने की क्रिया इतनी लम्बी है कि वर्षों की नहीं, जन्म-जन्मान्तर के बाद भी तुम प्राप्त नहीं कर सके। आनंद को पहचानना और स्वयं आनंदित न होना, यही दुःख का कारण है। आनंद है ज्ञान और अज्ञान दोनों से मुक्ति। मतलब कि मन से मुक्ति। मन से मुक्त होते ही व्यक्ति आनंद में आ जाता है।

व्यक्ति अनेक विचारों को गले लगाकर ही सत्य और वास्तविकता माने तो उसका बंधनग्रस्त मन मुक्ति के आनंद का रस कहां से ले पायेगा! मानव घर बदल सकता है लेकिन मन नहीं बदल सकता, यही उसकी करुणता है।

लेकिन व्यक्ति अनेक विचारों को गले लगाकर ही सत्य और वास्तविकता माने तो उसका बंधनग्रस्त मन मुक्ति के आनंद का रस कहां से ले पायेगा! मानव घर बदल सकता है लेकिन मन नहीं बदल सकता, यही उसकी करुणता है।

आनंदित रहने के लिए पांच उपायः-

1. आप अपने आप को जीवन की यात्रा का मुसाफिर समझो। आनंद की खोज के लिए बाहर नहीं अंदर की यात्रा करनी होगी।
2. आनंद की इस खोज के बदले प्रत्येक स्थिति और प्रत्येक क्षण में आनंद व मौज में रहें।
3. अशुभ होने के नकारात्मक विचार छोड़ दें, `शुभ' आपकी राह देख रहा है।
4. मन को बचाने के लिए दूषित विचारों और लुभावने विज्ञापनों से दूर रहें।
5. मन को संकीर्णता से बाहर लाएंगे तो मन मुक्त होकर आनंद की वर्षा करेगा।

उसके लिए अपनी आदत बनायें कि रोज़ बैठकर पाँच-दस मिनट अपने से बातें कर अनावश्यक विचारों को समाप्त करें और नये श्रेष्ठ विचारों का सृजन करें।